वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 350
ISBN-978-93-82071-27-3

तत्त्वार्थसूत्र एवं दशधर्म भजन

–मंगल आशीर्वाद –

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत दशलक्षण पर्व-2012
के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2538, द्वि. भाद्रपद शुक्ला 4	मूल्य
1100 प्रतियाँ	दशलक्षण महापर्व-19 सितम्बर 2012	12/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

बाल ब्र. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

दशधर्म भजन

समुच्चय भजन

तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे......

पर्व दशलक्षण आया है-2
भक्तों ने प्रभु की भक्ति से अपना, उपवन सजाया है।। पर्व...।। टेक.।।

दशलक्षण का ये बगीचा, कितना सुन्दर लगता है।
भादों शुक्ला पंचमि से, चौदस तक यह सजता है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।1।।

कर्मों की विलक्षण गति है, ये सबको नाच नचाते।
इनसे मुक्ती पाने की, युक्ती ये धर्म बताते।।
पर्व दशलक्षण आया है।।2।।

यह पर्व क्षमागुण का शुभ, संदेश लिए आता है।
भव-भव के वैर भुलाकर, मैत्री को सिखलाता है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।3।।

मेरे आतम में भी प्रभु, ये धर्म दशों बस जावें।
पारस प्रभु सम कष्टों में, भी धैर्य हृदय बस जावे।।
पर्व दशलक्षण आया है।।4।।

यह धर्म कल्पतरु मुझको, सौभाग्य से प्राप्त हुआ है।
''चन्दनामती'' नरभव का, अब सच्चा ज्ञान हुआ है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।5।।

भजन-1

उत्तम क्षमा धर्म

तर्ज–आवाज देकर......

क्षमा धर्म से अपनी बगिया सजाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।। टेक.।।

न क्रोधी प्रकृति आत्मा की कही है।
वहाँ तो सदा शान्ति सरिता बही है।।
नहीं क्रोध कर अपनी गरिमा घटाओ।
गुणों की सुरभि......।।1।।

हो यदि कोई दुश्मन तुम्हारा जगत में।
उसे जीत सकते हो तुम प्रेम बल से।।
सहनशीलता धैर्य शक्ती बढ़ाओ।
गुणों की सुरभि......।।2।।

प्रभू पार्श्व ने ही क्षमा धर्म पाला।
इसे धार ऋषियों ने उपसर्ग टाला।।
उन्हीं सबके चरणों में मस्तक झुकाओ।
गुणों की सुरभि......।।3।।

करूँ प्रार्थना प्रभु मुझे भी क्षमा दो।
प्रभो! मेरे मन को भी चन्दन बना दो।।
यही भावना ''चन्दनामति'' बनाओ।
गुणों की सुरभि......।।4।।

भजन-2

उत्तम मार्दव धर्म

तर्ज–हाय हाय ये......

धर्म मार्दव को सब मिल निभाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। टेक.।।
मान मानव का गुण बन गया है,
जब कि अवगुण ही उसको कहा है।
अवगुणों को हृदय से हटाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव......।।1।।

इस अहं ने ही सबको ठगा है,
इन्द्रिय विषयों में ही मन लगा है।
सोच अब मन को विनयी बनाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव......।।2।।

ज्ञानियों की विनय करना सीखो,
संयमी की विनय करना सीखो,
संयमी बनके संयम निभाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव......।।3।।

फल सहित वृक्ष झुकता सदा है,
ऐसे ही गुण सहित मन कहा है।
मन का उपवन गुणों से सजाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव......।।4।।

विनय विद्या प्रदाता कही है,
ऋद्धि सिद्धी की दाता वही है।
''चन्दनामति'' हृदय मृदु बनाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव......।।5।।

भजन-3
उत्तम आर्जव धर्म

तर्ज–दिन रात मेरे स्वामी......

हे नाथ! आपसे मैं, वरदान एक चाहूँ। वरदान......
ऋजुता हृदय में लाकर, आर्जव धरम निभाऊँ। आर्जव......।। टेक.।।

ना जाने क्यों कुटिलता का भाव आ ही जाता।
हे प्रभु! उसे हटा कर समता का भाव लाऊँ।। समता का......।।1।।

माया में फंसके मैंने मानव जनम गंवाया।
अनमोल इस रतन को अब ना गंवाने पाऊँ।। अब ना......।।2।।

यह भी सुना है माया से पशुगती है मिलती।
उस पशुगती में हे प्रभु! अब मैं न जाना चाहूँ।। अब मैं......।।3।।

शायद अनादिकालिक संस्कार संग लगे हैं।
मैं चाहकर भी हे प्रभु! उनसे न छूट पाऊँ।। उनसे न......।।4।।

यह पुण्यकर्म ही जो गुरु देशना मिली है।
फिर 'चन्दनामती' मैं, मन में उसे बिठाऊँ।। मन में......।।5।।

भजन-4
उत्तम सत्य धर्म

तर्ज–झिलमिल सितारों का......

सत्य धरम जब पालन होगा, पापों का प्रक्षालन होगा।
इसका पालन वचन सिद्धि का साधन होगा।। सत्य धरम......।। टेक.।।

जाने कितने झूठ भी मैंने, जनम जनम में बोले हैं।
स्वार्थसिद्धि के कारण अपने, वचन न मैंने तोले हैं।।
अब उन सबका क्षालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य......।।1।।

बहुत से विषकण मिलकर जैसे, अमृत नहिं बन सकते हैं।
कई झूठ मिलकर वैसे ही, सत्य नहीं बन सकते हैं।।
धर्म सदा अमृत सम होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।।सत्य......।।2।।

साधू उत्तम सत्य वचन को, पूर्णरूप से धरते हैं।
श्रावक भी सच्चाई का, आंशिक पालन कर सकते हैं।।
अतः झूठ वच टालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य......।।3।।

राजा वसु ने झूठ बोलकर, अधोगती को प्राप्त किया।
सत्य बोलने वालों ने ''चन्दना'', ऊर्ध्वगति प्राप्त किया।।
धर्म सदा मनभावन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य......।।4।।

भजन-5
उत्तम शौच धर्म

तर्ज–जिस गली में......

जिस गती में न उत्तम धरम मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।
जिस मती से धरम शौच पल ना सके,
उस मती को भी हे नाथ! पाना नहीं।। टेक.।।

हीरा सा यह मनुज तन मिला आज है।
लोभ में ही गया यदि तो क्या लाभ है।।
लोभ में ही गया यदि......
जिस गती में धरम लाभ ना मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।। जिस......।।1।।

कुछ तो सीमा करो अपनी इच्छाओं की।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी निजात्मा में भी।।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी......
लोभ का त्याग पूरा भी कर ना सको,
तो भी ज्यादा उसी में लुभाना नहीं।। जिस......।।2।।

लोभवश चक्रवर्ती नरक में गया।
भरत सम्राट् ने तज उसे शिव लहा।।
भरत सम्राट् ने तज......
'चन्दनामति' जहाँ लक्ष्य की पूर्ति हो,
रत्नत्रय धारकर मुझको जाना वहीं।। जिस......।।3।।

भजन-6
उत्तम संयम धर्म

तर्ज–बाबुल की दुआएं......

उत्तम संयम के पालन से, मानव को शिव का द्वार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।टेक.।।

पारसमणि को पाना जैसे, दुर्लभ ही नहीं अतिदुर्लभ है।
वैसे ही संयमरूपी मणि को, पाना भी अतिदुर्लभ है।।
यदि मिल जावे वह रत्न तो समझो, मोक्षपंथ साकार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।1।।

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम से, संयम द्वैविध माना है।
इनका पालन करने वालों को, शिवपद निश्चित पाना है।।
श्रावक को भी किंचित् संयम, पालन से सुख आधार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।2।।

यदि संयम पालन कर न सको, निंदा न संयमी की करना।
उनकी पूजन आहार आदि से, निज आतम शुद्धी करना।।
"चन्दनामती" संयम व संयमी, में ही सुख का सार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।3।।

भजन-7
उत्तम तप धर्म

तर्ज–हम लायें हैं तूफान से......

हे वीतराग प्रभु! मुझे तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।। टेक.।।

विपरीत अर्थ करके तप का पतित हो गया।
मैं क्षणिक सुख को भोगकर उसमें ही खो गया।।

हे नाथ! इन दुखों से मुझको मुक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।1।।

कन्या अनंगशरा ने तप किया था वनों में।
बन करके विशल्या दिखाई शक्ति क्षणों में।।
हे नाथ! मुझे भी वही तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।2।।

उत्तम तपो धरम से मुनी मोक्ष जाते हैं।
श्रावक भी करें तप यदी तो स्वर्ग पाते हैं।।
हे नाथ! 'चन्दनामती' कुछ युक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।3।।

भजन-8

उत्तम त्याग धर्म

तर्ज–तुमसे मिलने को......

त्याग लेने का मन करता है।
हे प्रभो! त्याग लेने का मन करता है।। टेक.।।

भ्रान्तिवश मैंने शुभ कर्म को तज दिया।
विषय भोगों में ही अपना मन कर लिया।।
उसे तजने का मन करता है।।हे प्रभो......।।1।।

त्याग की महिमा अब मैंने जानी प्रभो।
दान की गरिमा अब मैंने मानी प्रभो।।
दान देने का मन करता है।।हे प्रभो......।।2।।

देना आहार औषधि अभयदान भी।
ज्ञान का दान दे तजना अज्ञान भी।।
ज्ञान लेने का मन करता है।। हे प्रभो......।।3।।

साधु ही त्याग उत्तम धरम पालते।
आज भी वे परम शांति को धारते।।
शांति पाने को मन करता है।। हे प्रभो......।।4।।

दान देकर के श्रावक जनम धन्य हो।
"चन्दनामति" मेरा मन भी धन धन्य हो।।
सुरभि लेने का मन करता है।। हे प्रभो......।।5।।

भजन-9

उत्तम आकिंचन्य धर्म

तर्ज–तुमसे लागी लगन......

धर अकिंचन धरम, कर ले तू शुभ करम, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।। टेक.।।

ना मे किंचन अकिंचन धरम है, पर को निज मानना ही भरम है।
तज दे मिथ्या भरम, पाल ले दश धरम, भव्य प्राणी।
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।1।।

पांच पापों में परिग्रह भी इक है, इसको मुनिवर न धरते तनिक हैं।
उनके पद में नमन, करके पावन हो मन, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।2।।

इसका कुछ त्याग श्रावक भी करते, पांच अणुव्रत का पालन जो करते।
अणुव्रतों का कथन, जिनवरों का वचन, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।3।।

व्रत सहित श्रेष्ठ मानव जनम है, व्रत रहित मन को रखना न तुम है।
व्रत से शिक्षा लें हम, 'चन्दनामति' है मन, सुन ले प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।4।।

भजन-10

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

तर्ज–दीदी तेरा देवर......

ब्रह्मचर्य व्रत को निभाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।
झुकता उसके आगे जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।टेक.।।

जो विषयों का त्यागी, है आत्मा का रागी,
वही ब्रह्मचर्य सहित है विरागी।
महासाधुगण की, निधी यह धरोहर,
वही इसके बल पर बने वीतरागी।।
उनको जग ने पावन है माना, हे नाथ! कठिन है उसे पाना।।1।।

सती सीता ने इसका कुछ अंश पाला,
हुई शीलव्रत की परीक्षा विशाला।
बनी जल की सरिता वो अग्नी की ज्वाला,
सुदर्शन का भी व्रत ने उपसर्ग टाला।।
उनकी जय से गूंजा जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।2।।

मुझे भी प्रभो! इसका पालन करा दो,
मेरी आतमा को भी पावन बना दो।
विषयों से मुझको विरागी बना दो,
मुझे 'चन्दना' आत्मस्वादी बना दो।।
जिससे हो ना भव भव में आना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।3।।

भजन-11

क्षमावणी पर्व

तर्ज–तीरथ कर लो पुण्य कमा लो......

क्षमागुण को मन में धर लो, क्षमा को वाणी में धर लो।
शत्रु मित्र सबमें समता का भार हृदय धर लो।।
क्षमा गुण को मन में धर लो।। टेक.।।

मैत्री का हो भाव सभी प्राणी के प्रति मेरा,
गुणीजनों को देख हृदय आल्हादित हो मेरा।।
वही आल्हाद प्रकट कर लो,
क्रोध बैर भावों को तजकर मन पावन कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।1।।

चिरकालीन शत्रुता भी यदि किसी से हो मेरी।
उसे भूलकर मित्रभावना बने प्रभो! मेरी।।
भावना सदा सरल कर दो,
चन्दन सी शीतलता से मन को शीतल कर दो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।2।।

एक-एक ईंटों को चुनने से मकान बनता।
एक-एक धागा बुनने से परीधान बनता।।
यही क्रम गुण में भी धर लो,
एक-एक गुण से आत्मा को परमात्मा कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।3।।

दश धर्मों के आराधन से मृदुता आती है।
भावों में 'चंदनामती' तब ऋजुता आती है।।
रत्नत्रय को धारण कर लो,
पर्वों का इतिहास यही जीवन में अमल कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।4।।

तत्त्वार्थसूत्र भजन

समुच्चय भजन

तर्ज –मेरा नम्र प्रणाम है...........

बारम्बार प्रणाम है,
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।
जिसका सार ग्रहण कर मानव, पाता आगमज्ञान है।।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, बारम्बार प्रणाम है।।टेक।।

दश अध्यायों में जीवादिक, सात तत्त्व बतलाये हैं।
श्री आचार्य उमास्वामी ने, सूत्र सरल समझाये हैं।।
मोक्ष आज नहिं किंतु मोक्ष-मारग का मिलता ज्ञान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, बारम्बार प्रणाम है।।1।।

प्रथम चार अध्यायों में ही, जीवतत्त्व का वर्णन है।
रत्नत्रय ही मोक्षमार्ग का, करवाता दिग्दर्शन है।।
तीनलोक में चतुर्गती के, भ्रमण का करे बखान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, बारम्बार प्रणाम है।।2।।

तत्त्व अजीव का वर्णन है, पंचम अध्याय में सारभरा।
छठी और सप्तम में आश्रव, के द्वारा संसार कहा।।
बंध तत्व अष्टम अध्याय में, वर्णित जो दुखखान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, बारम्बार प्रणाम है।।3।।

संवर और निर्जरा का, वर्णन नवमीं अध्याय में।
तप संयम से कर्म निर्जरा, करो यही बस न्याय है।।
मोक्षतत्त्व के वर्णन में, दशवीं अध्याय प्रमाण है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, बारम्बार प्रणाम है।।4।।

इसीलिए इसके पढ़ने से, इक उपवास का फल मिलता।
अर्थ ''चंदनामती'' अगर, समझें तो आत्मकमल खिलता।।
ग्रंथों का संक्षिप्त सार, इस ग्रंथ में ही विद्यमान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, बारम्बार प्रणाम है।।5।।

भजन-1

प्रथम अध्याय

तर्ज–हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.........

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

संसार दुखों से घबराकर, इक मानव हितपथ ढूंढ़ रहा।
निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरु को लख-कर प्रश्न एक वह पूछ रहा।।
आत्मा का हित कैसे होता, कैसे प्राणी निजसुख पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

रत्नत्रय ही है मोक्षमार्ग, जो आतमसुख का कारण है।
गुरु कहते इससे ही होता, दुःखों का सहज निवारण है।।
पाँचों ही सम्यग्ज्ञानों से, मानव सच्चा सुख पा जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

मति श्रुत अवधि ये तीन ज्ञान, मिथ्यात्वरूप भी होते हैं।
सम्यक्त्व सहित ''चंदनामती'', ये मोक्ष प्राप्ति में हेतू हैं।।
तत्त्वार्थसूत्र अध्याय प्रथम में, यही सार गुरु समझाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-2

द्वितीय अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

हैं जीव तत्व के पाँच भाव, जो आत्मा में ही होते हैं।
औदयिक पारिणामिक उपशम, क्षय और क्षयोपशम होते हैं।।
संसारी-मुक्त सभी जीवों में, यथाशक्ति पाये जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

चौरासी लाख योनियों में, यह जीव जनम कैसे लेता।
सुख-दुख अनुभव के साथ सदा, इन्द्रिय विषयों में रस लेता।।
औदारिक आदि शरीरों से, अशरीरी तभी न बन पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

कुछ कारणवश तिर्यञ्च मनुज का, मरण अकाल भी हो सकता।
नहिं देव नारकी भोगभूमि, अरु मोक्षगामि के हो सकता।।
''चंदनामती'' तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय द्वितीय में ये बातें।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-3

तृतीय अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

आचार्य उमास्वामी तृतीय, अध्याय में ऐसा कहते हैं।
पापों के करण जीव नरक, आदिक दुःखों को सहते हैं।।
हैं मध्यलोक में मनुज और, तिर्यंच जीव यह बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

है द्वीप समुद्रों में वर्णित, भूगोल जैन जाना जाता।
साकाररूप उसका तीरथ, हस्तिनापुरी में दिख जाता।।
वहाँ जम्बूद्वीप व तेरहद्वीप के, दर्शन कर सब हरषाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

कुछ विज्ञ इसे निःसार समझ, समुचित वर्णन नहिं करते हैं।
पर ज्ञानमती जी के प्रवचन, उन पर भी अनुग्रह करते हैं।।
''चंदनामती'' गुरुजन भी इस, अध्याय का महिमा बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-4

चतुर्थ अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

तत्त्वार्थसूत्र अध्याय चतुर्थ में, ऊर्ध्वलोक का वर्णन है।
देवों के चार भेद एवं, उनकी स्थिति का वर्णन है।।
वे भवनवासि व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक नामसे कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

चन्द्रमा सूर्य नक्षत्रादिक हैं, ज्योतिर्वासी देव कहें।
इनके विमान मेरूपर्वत की, सदा-सदा परिक्रमा करें।।
बस इसीलिए रात्री दिन के हैं, भेद धरा पर बन जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

यद्यपि चारों गतियों में, देवगती में सर्वाधिक सुख है।
पर संयम नहिं ले सकते वे, इस बात का ही उनको दुख है।।
''चंदनामती'' वह संयम तप, बस मानव धर शिवपद पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-5

पंचम अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

है जीव से भिन्न अजीव तत्व, जो पाँच भेद युत कहलाता।
पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल से, उसको पहचाना जाता।।
इनमें से बस पुद्गल मूर्तिक, अरु पाँच अमूर्तिक कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

गागर में सागर के समान, तत्त्वार्थसूत्र की रचना है।
इसकी पंचम अध्याय में गुरुवर, उमास्वामी का कहना है।।
ज्ञानी इन सबको पृथक् समझ, निज आतम अनुभव कर पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

परमाणु और स्कन्धों में, पुद्गल की शक्ति समाहित है।
आधुनिक आज युग में पुद्गल, पर शोध करें वैज्ञानिक हैं।।
''चंदनामती'' चेतन व अचेतन, शक्ति सूत्र ये बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-6

छठी अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

तत्त्वार्थसूत्र षष्ठम अध्याय में, गुरु ने आश्रव तत्त्व कहा।
आत्मा में कर्मों का आना ही, समझो आश्रव तत्त्व रहा।।
तीनों योगों के द्वारा वे, शुभ-अशुभरूप हैं बन जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

कर देव-शास्त्र-गुरु की भक्ती, शुभ आश्रव मानव कर सकता।
अरु अशुभाश्रव के कारण पर की, निंदा आदिक तज सकता।।
निज भावों के कर्ता धर्ता, ये जीव स्वयं ही कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

हर प्राणी के प्रति मैत्री हो, गुणवानों के गुण ग्रहण करें।
हो दुखियों के प्रति दया भाव, विपरीत में मध्यम भाव धरें।।
''चंदनामती'' ये भाव शुभाश्रव, में कारण माने जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-7

सप्तम अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

हिंसादिक पापों से विरक्त, होना व्रत कहलाता सच में।
वह अणुव्रत और महाव्रत से, दो रूप कहा जाता जग में।।
मुनि और आर्यिका महाव्रती, श्रावक अणुव्रत को अपनाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

कर्माश्रव से बचने हेतू, तत्त्वार्थसूत्र का पाठ करो।
सप्तम अध्याय के सूत्रों पर, चिन्तन व मनन स्वाध्याय करो।।
भव भव में रोते प्राणी भी, आगे अविनश्वर सुख पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

जीवन भर व्रत का पालन कर, अंतिम समाधि को ग्रहण करो
सम्यग्दृष्टि बनकर अतिचार, रहित व्रत संयम ग्रहण करो।।
गुरुमुख से यह प्रवचन सुन कर, ''चंदनामती'' सब तिर जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-8

अष्टम अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

तत्त्वार्थसूत्र अष्टम अध्याय में, उमास्वामी जी कहते हैं।
वे बंधतत्व का वर्णन क्रमशः, पाँच हेतु से करते हैं।।
उस कर्मबंध के कारण ही, प्राणी संसारी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

प्रकृती स्थिति अनुभाग प्रदेश, ये चार भेद युत बंध कहा।
आठों कर्मों को इक सौ-अड़तालिस भेदों में पुनः कहा।।

मोहनीय कर्म सब कर्मों का राजा है आगम बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

शुभ कर्मों के फल से प्राणी को, सुख की प्राप्ती होती है।
प्राकृतिक रूप से अशुभ कर्म से, दुख की प्राप्ती होती है।।
''चंदनामती'' तत्त्वज्ञानी, सब में समता को अपनाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-9
नवमीं अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।

संवर एवं निर्जरा तत्त्व, नवमी अध्याय में वर्णित हैं।
तत्त्वार्थसूत्र में उमास्वामि के, द्वारा ये उपदेशित हैं।।
आस्रव निरोध संवर व निर्जरा, फल दे कर्म जो खिर जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।

तेरह प्रकार चारित्र से मुनिजन, कर्मों का संवर करते।
उपसर्ग परीषह को सहने से, अशुभ कर्म उनके झड़ते।।
चारों ध्यानों में धर्म-शुक्ल, ध्यानों में स्थिरता पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।

निर्ग्रन्थ वीतरागी मुनिवर ही, पूर्ण निर्जरा करते हैं।
स्नातक बन ''चंदनामती'', वे ही मुक्ति श्री वरते हैं।।
योगों की सारी महिमा है, योगी ही अयोगी बन पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।

भजन-10
दशवीं अध्याय

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।टेक.।।
तत्त्वार्थसूत्र का अपरनाम है, मोक्षशास्त्र माना जाता।
इसकी दशवीं अध्याय के द्वारा, मोक्षतत्व जाना जाता।।
सब कर्म नष्ट करके जिनवर ही, मोक्षधाम को हैं पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।1।।
त्रैलोक्य शिखर पर सिद्धशिला है, मुक्त जीव वहाँ रहते हैं।
संसार में वे न कभी आते, ऐसा जिन आगम कहते हैं।।
धर्मास्तिकाय के बिना सिद्ध, नहिं लोक के आगे जा पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।2।।
है इस अध्याय का सार यही, हम मोक्ष शास्त्र अध्ययन करें।
आचार्य उमास्वामी को हम सब, भक्तिभाव से नमन करें।।
''चंदनामती'' इस ग्रंथ की सब, टीका पढ़ ज्ञानी सुख पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।3।।
अक्षर-पद-मात्रा-स्वर-व्यंजन, आदिक यदि न्यून कहीं होवें।
साधूजन क्षमा करें उसको, श्री उमास्वामि के शब्दों में।।
यह लघुता ज्ञान की गरिमा है, विनयी जन इसको अपनाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, श्री उमास्वामि तव गुण गाते।।4।।

ध्यान भजन-1

तर्ज–कभी राम बनके......

निज ध्यान करने, गुणगान करने,
चले आना आतम में चले आना।। टेक.।।

बड़ा चंचल है मन इसको बांधो।
बड़ा नश्वर है तन इसको साधो।।

शुद्धात्म भजने, परमात्म भजने,
चले आना आतम में चले आना।।1।।

कभी ॐकार में मन रमाओ।
कभी मन में प्रभू को बसाओ।।
मंत्र जाप करने, मन को साफ करने,
चले आना आतम में चले आना।।2।।

मन के मंदिर में वेदी बनाओ।
उसपे आतम प्रभू को बिठाओ।।
पूजा पाठ करने, मन एकाग्र करने,
चले आना आतम में चले आना।।3।।

भावों का छत्र प्रभु पे लगाओ।
''चन्दना'' श्रद्धा चंवर ढुराओ।।
प्रभु को प्राप्त करने, आतम लाभ वरने,
चले आना आतम में चले आना।।4।।

ध्यान भजन-2

तर्ज–तन डोले......

ॐकार बोलो, फिर आँखें खोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे,
नर जन्म सफल हो जाएगा।। टेक.।।

प्रातःकाल उषा बेला में, बोलो मंगल वाणी।
हर घर में खुशियाँ छाएँगी, होगी नई दिवाली।। हे भाई......
प्रभु नाम बोलो, निजधाम खोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे।
नर जन्म सफल हो जाएगा।। ॐकार......।।1।।

परमब्रह्म परमेश्वर की, शक्ती यह मंत्र बताता।
णमोकार के उच्चारण से, अन्तर्मन जग जाता।। हे भाई......
नौ बार बोलो, सौ बार बोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे,
नर जनम सफल हो जाएगा।। ॐकार......।।2।।

ॐ शब्द का ध्यान 'चंदना', मन को स्वस्थ बनाता।
इसके ध्यान से मानव इक दिन, परमेष्ठी पद पाता।। हे भाई......
नौ बार बोलो, सौ बार बोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे।
नर जन्म सफल हो जाएगा।। ॐकार......।।3।।

ध्यान भजन-3

शाम सबेरे दो घड़ी, तू आतम ध्यान लगाया कर।
यही तपस्या है बड़ी, तू राग और द्वेष हटाया कर।।टेक.।।

सोचा कर तू मन में मैं हूँ, कौन कहाँ से आया हूँ।
क्या करना था मुझे यहाँ पर, क्या कुछ कर मैं पाया हूँ।
जाना है किस ठोर को तू, दिल में ख्याल ये लाया कर।।यही तपस्या..।।1।।

पाप और पुण्य किया है कितना, रोज हिसाब लगाया कर।
पाप अगर हो जाए अधिक तो, उस पर पश्चाताप कर।।
और कभी फिर भूल कर भी, वह न पाप कमाया कर।।यही तपस्या..।।2।।

पाप कर्म को छोड़ो भाई, पुण्य कर्म को कर दीजे।
पाप कर्म संसार का कारण, यह दृढ़ निश्चय कर लीजे।।
पाप कर्म को छोड़कर तू, भाव विशुद्ध बनाया कर।।यही तपस्या..।।3।।

मैं न किसी का कोई नहि मेरा, तन से भी मैं न्यारा हूँ।
रागद्वेष नहि भाव हमारा, दर्शन ज्ञान भंडारा हूँ।।
ऐसा दिल में सोचकर तू, परपद में नहिं जाया कर।।यही तपस्या..।।4।।

मैं ही ब्रह्मा मैं ही विष्णु, मैं ही तो परमेश्वर हूँ।
मेरा आतम है परमातम मैं शुद्धात्म जिनेश्वर हूँ।।
ऐसा दिल में सोचकर तू, निज पद में ही आया कर।।यही तपस्या..।।5।।

ध्यान भजन-4

तर्ज–आवाज देकर हमें तुम......

चलो मन को अन्तर की, यात्रा कराएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।। टेक.।।

मेरी आतमा सत्य, शिव सुन्दरम् है।
कुसंगति से उसमें, हुआ मति भरम है।।
पुरुषार्थ कर, शुद्ध आतम को ध्याएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।।1।।

ये यात्रा वचन मन, व तन शुद्ध करती।
ये यात्रा अमन चैन, परिपूर्ण करती।।
इसी यात्रा से, मन को तीरथ बनाएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।।2।।

न हम हैं किसी के, न कोई हमारा।
सभी से जुदा, आतमा है निराला।।
उसे 'चंदना', खोज करने से पाएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।।3।।

ध्यान भजन-5

तर्ज –क्या खूब........

निज ध्यान करने से, आतमनिधि मिलती है।
तन मन की मुरझाई, कलियाँ खिलती हैं,
अन्तर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।टेक.।।

संसार भयानक वन है-हाँ वन है,
तो भी वहाँ पर इक खिला धर्म उपवन है।
हमें पाना है उसकी छाया-हाँ छाया,
बस इसीलिए यह आतम ध्यान लगाया।

सुख शांती की प्राप्ति सदा इससे ही मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।1।।

मेरा मन मंदिर निर्मल-हाँ हाँ निर्मल,
इसके अंदर इक कमल की वेदी सुन्दर।
जहाँ शांत विराजे भगवन्-हाँ हाँ भगवन्,
उस भगवन का ही करना है मुझे दर्शन।।
उस दर्शन से सच्ची दृष्टी हमको मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।2।।

मैं ही ब्रह्मा मैं विष्णू-हाँ विष्णू,
मैं कष्टों को सहने में बनूँ सहिष्णू।
मैं अविचल अडिग सुमेरू-हाँ हाँ मेरू,
मैं निज मन को नहिं आकुलता से घेरूँ।
यह शक्ती "चन्दना" आत्मभक्ती से मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।3।।

ध्यान भजन-6

तर्ज–मैं चंदन बनकर......

हे प्रभु! मैं अपने आतम, में ऐसा रम जाऊँ।
संसार के बन्धन से, मैं मुक्त हो जाऊँ।। हे प्रभु......।। टेक.।।
संकल्प विकल्पों का यह, सागर संसार है।
सागर की तरंगों से अब, मैं ऊपर उठ जाऊँ।। हे प्रभु......।।1।।
दुःखों की पर्वतमाला, कब टूट पड़ेगी मुझ पर।
उस पर्वत पर हे भगवन!, मैं कैसे चढ़ पाऊँ।। हे प्रभु......।।2।।
आतम सुख के अमृत में, मैं डूब गया अब स्वामी।
उसका आस्वादन लेकर, 'चंदना' सहज सुख पाऊँ।। हे प्रभु......।।3।।